दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

DEPARTMENT विभाग : ललित कला एवं संगीत विभाग

Syllabus for Research Eligibility Test (RET) (भाोध पात्रता परीक्षा का पाठ्यकम)

Section A खण्ड–अ

दृश्यकला एवं मंचकला

(संयुक्त प्र"न पत्र)

UNIT - I

1. शोध : तात्पर्य एवं परिभाषा
2. शोध का लक्ष्य, शोध की प्रकृति एवं प्रकृया

UNIT - II

3. कला/संगीत में शोध की दि"ाएँ
4. विषय निर्वाचन : क्षेत्र का ज्ञान, रूचि उत्सुकता, विषय की उपादेयता समस्या चुनाव का मानदण्ड, विषय निर्वाचन पद्वति।

UNIT – III

5. परिकल्पना, दत्त संकलन, दत्त संकलन की विधियॉ, दत्त संकलन के उपकरण, पर्यवेक्षण, साक्षात्कार, अन्वेषण प्रपत्र, अनुसूची मनोवैज्ञानिक परीक्षण।

UNIT - IV

6. दत्त सामग्री का वि"लेषण एवं व्याख्या।
7. शोध प्रबन्ध प्रतिवेदन।

Section B खण्ड–ब

मंचकला

UNIT - I

पारिभाशिक भाब्दावली – नाद, श्रुति, स्वर, ग्राम–मूर्छना, जाति, राग, ताल, तान, गमक, गांधर्व–गान, मार्ग–दे"ाी, गीति, गान, वर्ण, अलंकार, मेलोडी, हार्मनी, स्वर–सप्तक, स्वर–अन्तराल, संवाद, विवाद, उपस्वर, पा"चात्य एवं कर्नाटक पारिभाषिक शब्दावली एवं उनका वर्णन, स्वरित (तानपुरा), अल्पत्व–बहुत्व, आविर्भाव–तिरोभाव, उठान, पे"ाकार, कायदा, रेला, रंग, लग्गी, लड़ी, फ"ाबन्दी, ताल, लय, मात्रा, आवर्तन, विभाग, सः"ाब्द क्रिया, निः"ाब्द क्रिया, ठेका, सरल गत, आदि गत, चक्रदार गत, फरमाइ"ाी गत एवं अतिरिक्त प्रकार की गतें और कायदे, उपागं, भाषांग, गति, कृति, कीर्तन, जातिस्वर, पद, स्वरजाति, रागमालिका, तिल्लाना, न्यास, अं"ा, प्रास, यति, अनुप्रास, अलापना, नरवल संगीत एवं अतिरिक्त पारिभाषित शब्दावली, गीतिनाट्य, नृत्य–नाट्य, बैतालिक, वर्षा–मंगल, बसन्तोत्सव, गीतवितान, स्वर–वितान, आकरामात्रिक स्वर–लिपि, मसीतखानी, रजाखानी।

प्रयोगात्मक भाास्त्र – रागो का विस्तृत एवं वि"लेषणात्मक अध्ययन, रागों का वर्गीकरण ग्राम–राग वर्गीकरण, मेल–राग वर्गीकरण, राग–रागिनी वर्गीकरण, थाट–राग वर्गीकरण एवं रागांग वर्गीकरण, रागों का समय–सिद्वान्त, भारतीय संगीत में मेलोडी एवं हार्मनी का प्रयोग, प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में श्रुतियों पर शुद्व–विकृत स्वरों का स्थापन।

हिन्दुस्तानी संगीत में प्रचलित तालों का विस्तृत ज्ञान, ताल के द"ा प्राणों एवं प्राचीन काल के मार्ग तथा दे"ाी तालों का ज्ञान, तिहाई निर्माण के मूल सिद्वान्त, चक्रदार गत, चक्रदार परन ताल के द"ा प्राणों के संदर्भ मं हिन्दुस्तानी एवं कर्नाटक तालों का विस्तृत अध्ययन, विभिन्न लयकारियॉ–दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, कुआड़, बियाड़ एवं उनके क्रियात्मक प्रयोग सम्बन्धित विस्तृत जानकारी।

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के तत्व कर्नाटक संगीत, पा"चात्य संगीत, विभिन्न प्रान्तों का संगीत, लोक संगीत।

गेय विधाएँ तथा उनका क्रमिक विकास – प्रबन्ध, ध्रुपद, ख्याल, धमार, ठुमरी, टप्पा, तराना, चंतुरंग, त्रिवट, वृन्द–गान, वृन्द–वादन, जावली, कृति, तिल्लाना, आलाप, वर्णम् (पद–वर्णम् एवं तान–वर्णम्) पदम्, रागम्, तानम्, पल्लवी, गीत, वर्ण, स्वरजाति, कल्पित, संगीत, राग–मालिका, नेरावल, स्वर–कल्पना (मनोधर्म संगीत), तेवरम्, दिव्यप्रबन्धम्, तिरूप्रूगज़। रवीन्द्र संगीत की मुख्य विधाएं, 'अकारमात्रिक' स्वरलिपि, देवनागरी लिपि का ज्ञान।

UNIT - II

घराना और गायकी – हिन्दुस्तानी संगीत में घराना का उद्गम और विकास एवं पारम्परिक हिन्दुस्तानी संगीत की प्रगति तथा संरक्षण में घरानों का सहयोग। घराना पद्वति के गुण–दोष। कण्ठ, वादन और अवनद्य के प्रमुख घरानों का अध्ययन। वर्तमान संगीत में घरानों की आव"यकता तथा सम्भावनाएँ। कर्नाटक संगीत की गायन और वादन की विभिन्न शैलियॉ और गुरू–ि"ाष्य परम्परा। रवीन्द्रनाथ टैगोर के सांगीतिक सृजन का सम्पूर्ण सर्वेक्षण, टैगोर की सांगीतिक रचनाओं की स्वरात्मक एवं लयात्मक विविधताएँ (उनके निजी प्रयोगात्मक विविधताओं सहित)। टैगोर के परिवार का सांस्कृतिक वातावरण (पथूरीयाघाट एवं जोरासॉको, कलकत्ता) टैगोर संगीत की विषयपरक विविधताएँ (पूजा, स्वदे"ा, प्रेम, प्रकृति, विचित्र अनुष्ठानिक)

भारतीय संगीत के भाास्त्रज्ञों का योगदान एवं उनकी भाास्त्रात्मक परम्परा – नारद, भरत, दत्तिल, मतंग, शारंगदेव, नान्यदेव एवं अन्य। लोचन, रामायण, पुंडरीक विट्ठल, सोमनाथ, दामोदर मिश्रा, अहोबल, ह्रदयनारायण देव, व्यंकटमखी, श्रीनिवास, पं0 भातखण्डे, पं0 डी0वी0 पलुस्कर, पं0 ओमकारनाथ ठाकूर, के0सी0डी0 बृहस्पति, डॉ0 प्रेमलता शर्मा एवं अन्य।

अवनद्य वाद्य सम्बन्धित प्राचीन, मध्यकालीन तथा आधुनिक ग्रंथों भरत नाट्य"ाास्त्र, संगीत समयसार, राधागोविन्द संगीत सार, मदरूल मौसीकी, भारतीय वाद्यों का इतिहास, संगीत शास्त्र, भारतीय संगीत में ताल और रूप, अभिनव ताल मंजरी, भारतीय संगीत वाद्य एवं अन्य ग्रंथ। प्राचीन मध्य एवं आधुनिक काल के अवनद्य वाद्यों के वि"ोषज्ञ जैसे, कुदऊ सिंह, भगवान दास, राजा छत्रपति सिंह, अनोखे लाल, अहमद जान थिरकवा, सामता प्रसाद, कि"ान महाराज एवं अन्य का योगदान।

टैगोर के गीतिनाट्य एवं नृत्य–नाट्य – मध्य एवं आधुनिककाल के कर्नाटक संगीत के प्रमुख शास्त्रज्ञों, रचनाकारों एवं मंचप्रद"ार्क कलाकारों का योगदान। रामामात्य, व्यंकटमखी, त्यागराज, मुत्थूस्वामी दीक्षितर, श्याम शास्त्री, गोपाल कृष्ण भारती, प्रोफेसर सम्बामूर्ति, पापानसम् ि"ावन, बसन्त कुमारी, सुब्बूलक्ष्मी, रामरी, टी0एन0 कृष्णन एवं अन्य।

UNIT - III

संगीत के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में – प्राचीन, मध्य एवं आधुनिककाल में हिन्दुस्तानी संगीत (कंठ, वादन तााि अवनद्य) कर्नाटक संगीत, रवीन्द्र संगीत का ऐतिहासिक विकास। पा"चात्य शास्त्रज्ञों का भारतीय संगीत में योगदान।

सौन्दर्यशास्त्र – सौन्दर्य"ाास्त्र का उद्गम, अभिव्यक्ति और परखः, सौन्दर्य"ाास्त्र के सिद्वान्त एवं भारतीय संगीत से सम्बन्ध। रस सिद्वान्त एवं भारतीय संगीत में इसका प्रयोग। हिन्दुस्तानी संगीत (कण्ठ, वादन तथा अवनद्व) कर्नाटक संगीत एवं रवीन्द्र संगीत का सांगीतिक सौन्दर्य शास्त्र तथा रस से सम्बन्ध। राग–रागिनी चित्रों, राग ध्यान इत्यादि के वि"ोष संदर्भ में ललितकलाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का अध्ययन। रवीन्द्रनाथ टैगोर की सौन्दर्यबोधात्मक भारतीय एवं पा"चात् दा"ार्निक चिन्तक एवं उनके विचार।

UNIT – IV

वाद्य और नृत्य – हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाले वाद्य (गायन, वादन तथा अवनद्य क्षेत्र में), उनकी उत्पत्ति, विकास तथा उनके सुप्रसिद्व कलाकार। तानपुरा तथा उसके उपस्वरों का महत्व। प्राचीन, मध्य तथा आधुनिक काल में हिन्दुस्तानी तथा

कर्नाटक संगीत के वाद्यों वा वर्गीकरण। रवीन्द्र संगीत में प्रयुक्त होने वाल वाद्य। भारतीय नृत्यों की सामान्य जानकारी : कत्थक, भरतनाट्यम, कुचीपुड़ी, ओडीसी, कथाकलि आदि।

लोक संगीत – भारतीय संगीत पर लोक संगीत का प्रभाव। लोक संगीत का रागों में शैलीगत परिवर्तन। रवीन्द्र संगीत, हिन्दुस्तानी तथा कर्नाटक संगीत की सुप्रसिद्व लोक धुनें एवं लोक नृत्य यथा : बाउल, भटियाली, लावनी, गरबा, कजरी, चैती, भॉड, भॉगड़ा, गिद्दा, घूंमर, स्वॉग, पण्डवानो, आमार प्राण मानुष आछे प्राण, आमार शोनार बांगला, कीर्तन, सारी, राय बे"ो, झूमर, करकट्टम, कवाड़ीअट्म, विल्लुपोट्टु, मयण्डीमेलम् तथा अन्य प्रसिद्व लोक विधाएँ। हिन्दुस्तानी लोक संगीत, कर्नाटक लोक गीत अथवा दक्षिणी लोक संगीत तथा रवीन्द्र संगीत अथवा बंगाल क लोक संगीत में एक दूसरे को प्रभावित करने वाले कारकों एवं तत्वों का वि"लेषण। भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोक संगीत का सामान्य अध्ययन : उत्तर प्रदे"ा, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, पंजाब, महाराष्ट्र, बंगाल आदि तथा पूर्वोत्तर एवं दक्षिणी भारत के लोक संगीत।

संगीत शिक्षण प्रणाली – गुरू–ि"ाष्य परम्परा, संगीत सम्प्रदाय प्रद"र्ानी, हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत के सन्दर्भ में विद्यालयी संगीत ि"ाक्षण। हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत ि"ाक्षण के सन्दर्भ में इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों एवं ि"ाक्षण में प्रयुक्त की जाने वाली सहायक सामग्री की प्रयोगात्मकता। हिन्दुस्तानी, कर्नाटक तथा रवीन्द्र संगीत में संगीतात्मक शोध के अन्तर्गत सांस्कृतिक पत्रकारिता, संक्षेपिका, सामग्री संकलन, क्षेत्रीय सांगीतिक कार्य एवं प्रोजेक्ट रिपोर्ट लेखन आदि। शास्त्रात्मक तथा मौखिक परम्परा के संगीत में अन्तःसम्बन्ध।